

मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान मार्च 1981

एक आश्चर्यजनक उपलब्धि—

पारद शिवालिंग

पूज्य सदगुरुदेव डॉ नारायण दत्त श्रीमाली

संसार में बहुत कुछ प्राप्य है, और प्रयत्न करने पर सब कुछ मिल सकता है, पर मन्त्रसिद्ध प्राप्त प्रतिष्ठापुक्त रससिद्ध शुद्ध पारे से निर्मित पारद-शिवालिंग प्राप्त होना सौभाग्य का ही सूचक है। जिसके पूर्व जन्म के पाप क्षय हो जाते हैं, और सौभाग्य का उदय होने लगता है, तभी उसे "पारद-शिवालिंग" प्राप्त हो सकता है।

मेरे देश-विदेश में बहुत घूमा हूँ, मैंने देखा है कि प्रत्येक व्यक्ति — चाहे वह उच्चस्तराध्य साधु हो या गृहस्थ, योगी हो या यति, नेता हो या अभिनेता—इस प्रकार का पारद शिवालिंग प्राप्त करने के लिये साक्षात्पित है, वे बहुत कुछ व्यय करने को भी तैयार हैं, परन्तु ऐसा पारद शिवालिंग प्राप्त होना भी संभव नहीं है।

क्योंकि पारे का ओषध अत्यन्त कठिन कार्य है, और उसे ठोस बनाने के लिये पारे को मूर्छित, खेचित, कीलित, शम्भोजित और शोधित जैसी कठिन प्रक्रियाओं में से गुजारना पड़ता है, तब जाकर कहीं पारा ठोस आकार ग्रहण करता है, और फिर उससे शिवालिंग निर्माण संभव है।

शिवालिंग निर्माण के बाद भी काफी मात्रिक क्रियाओं से गुजरने पर "पारद-शिवालिंग" रस सिद्ध एवं चैतन्य हो पाता है, जिससे वह पूर्ण सक्षम एवं प्रभाव युक्त बनता है।

इसीलिये तो कहा गया है, कि जिसके घर में "पारद-शिवालिंग" है, वह भगवती कई पीढ़ियों तक के लिये घर में ऋद्धि-सिद्धि एवं स्थायी लक्ष्मी को स्थापित कर लेता है।

पारद-शिवालिंग के गुणों से, उसके महत्व से और उसके अनेक प्रभावों से पूरे के पूरे समग्र पुराण शास्त्र भरे पड़े हैं, इस लेख में संक्षिप्त में पाठकों की जानकारी हेतु "पारद शिवालिंग" पर सामग्री प्रस्तुत है—

जीवन में जो मनुष्य सर्वश्रेष्ठ बने रहना चाहते हैं, जो व्यक्ति सामान्य घर में जन्म लेकर विपरीत परिस्थितियों में बड़े होकर सभी प्रकार की बाधाओं,

कष्टों और समस्याओं के होते हुए भी जो जीवन् में अपने लक्ष्य को प्राप्त करना चाहते हैं या जो व्यक्ति आर्थिक, व्यापारिक और भौतिक दृष्टि से पूर्ण-सुख

प्राप्त करना चाहते हैं उन्हें अपने घर में "पारद-शिव-लिंग" की स्थापना करनी चाहिए। संसार के सभी साधक और योगी इस बात को एक स्वर से स्वीकार करते हैं कि जो व्यक्ति "पारद-शिवलिंग" की पूजा करता है, उसके समान अन्य कोई व्यक्ति सौभाग्यशाली नहीं कहा जा सकता। पारद-शिवलिंग के पूजन से जहां पूर्ण भौतिक सुख-सुविधाएं प्राप्त होती हैं, वहीं उसे जीवन में मोक्ष प्राप्ति भी निश्चित रूप से सुलभ रहती है।

वैज्ञानिक दृष्टि से पारा या पारद द्रव्य पदार्थ है इसे अंग्रेजी में 'मरकरी' कहते हैं। इसमें अन्य किसी भी प्रकार के पदार्थ का सम्मिश्रण संभव नहीं, साथ ही इस पारे को ठोस आकार में बनाना अत्यन्त कष्ट साध्य है, और जब तक पारद ठोस आकार ग्रहण नहीं कर लेता, तब तक शिवलिंग का निर्माण संभव नहीं होता, परन्तु फिर भी रसायन के माध्यम से पारे को ठोस बनाया जा सकता है और जब पारा ठोस स्वरूप ग्रहण करने लगता है तब उसे शिवलिंग का आकार दे दिया जाता है और बाद में वह इतना ठोस हो जाता है कि उसके सामने शीशे की बनी गंगली भी सचली प्रतीत होती है।

संसार के सुप्रसिद्ध योगी पूज्य गुरुदेव स्वामी सच्चिदानन्दजी ने कहा है कि जो साधक "पारद-शिव-लिंग" को अपने घर में रखकर उसकी पूजा करता है या मात्र उसके दर्शन ही करता है तो वह सभी पापों से मुक्त होकर अनेक सिद्धियों और धन-धान्य को प्राप्त करता हुआ पूर्ण सुख प्राप्त करता है, संसार में जितने भी शिवलिंग हैं उन सबकी पूजा का फल केवल मात्र पारद-शिवलिंग के पूजन से ही प्राप्त हो जाता है।

शास्त्रों के अनुसार रावण रससिद्ध योगी था, उसने "पारद-शिवलिंग" की पूजा कर शिव को पूर्ण आराधन कर अपनी नगरी को स्वर्णमयी बनाने में सफल हो सका था। बाणासुर ने पारद-शिवलिंग की पूजा कर उनसे मनोवांछित वर प्राप्त किया था, यह विवरण "रघु-संहिता" में स्पष्ट रूप से उल्लिखित है।

अन्य शास्त्रों में भी इस बारे में जो विवरण प्राप्त होते हैं उससे यह स्पष्ट है कि वास्तव में ही पारद शिवलिंग दुर्लभ है और बिरले लोगों के घर में ही इस प्रकार के शिवलिंग स्थापित होते हैं।

मैंने पिछले पांच वर्षों में इस प्रकार के रससिद्ध पारे को ठोस बनाकर कई शिवलिंग बनाये हैं और जिन-जिन शिष्यों को या परिचितों को दिये हैं वे सभी आज अच्चे स्तर पर हैं और आश्चर्यजनक उन्नति की तरफ अग्रसर हैं, साधकों को इससे अपनी साधनाओं में पूर्ण सफलता मिली है, और व्यापारियों को इसकी वजह से जो आश्चर्यजनक उन्नति प्राप्त हुई है वह उनके स्वयं के लिये भी चकित कर देने वाली है।

नीचे मैं कुछ महत्वपूर्ण ग्रन्थों के विवरण दे रहा हूं, जिससे स्पष्ट होता है, कि पारद-शिवलिंग कितना अधिक महत्वपूर्ण है—

१. योगशिखोपनिषद :

रसलिंगं महालिंगं शिवशक्तिनिकेतनम् ।

लिंगं शिवालयं प्रोक्तं सिद्धिदं सर्वदेहिनाम् ॥

अर्थात् रसलिंग ही महालिंग है, और इसे ही शिव शक्ति का घर या शिवालय कह सकते हैं, इसके प्राप्त होने से ही पूर्ण सिद्धि प्राप्त होती है।

२. सर्वदर्शनसंग्रह :

अभ्रकं तव बीजं तु मम बीजं तु पारदः ।

बद्धो पारद लिंगो यं मृत्यु दारिद्र्य नाशनम् ॥

अर्थात् भगवान् शंकर स्वयं भगवती से कहते हैं कि पारद को ठोस कर लियाकर बनाकर जो पूजन करता है उसे जीवन में मृत्यु-भय व्याप्त नहीं होता और किसी भी हालत में उसके घर में दरिद्रता नहीं आ पाती।

३. रसरत्नसमुच्चय :

विधाय रसलिंगयो भक्तियुक्तः समर्चयेत् ।

जगत्त्रितयलिंगानां पूजाफलमवाप्नुयात् ॥

अर्थात् जो भक्ति के साथ पारद शिवलिंग की पूजा करता है उसे तीनों लोकों में स्थित शिवलिंग की पूजा का फल प्राप्त होता है तथा उसके समस्त महापाप नाश हो जाते हैं ।

४. रसार्णव-तन्त्र :

धर्मार्थकाममोक्षारूपा पुरुषार्थश्चतुर्विधा ।

सिध्यन्ति नात्र संदेहो रसरजप्रसादतः ॥

अर्थात् जो व्यक्ति पारद शिवलिंग की एक बार भी पूजा कर लेता है उसे इस जीवन में ही धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष रूपी चारों प्रकार के पुरुषार्थों की प्राप्ति हो जाती है ।

स्वयम्भू लिंग सहस्रयत्फलं सम्यगर्चनात् ।

तत्फलं कोटिगुणितं रसलिंगार्चनाद्भवेत् ॥

अर्थात् हजारों प्रसिद्ध लिंगों की पूजा से जो फल मिलता है, उससे करोड़ गुना फल पारद निर्मित शिवलिंग की पूजा से सहज ही में प्राप्त हो जाता है ।

५. शिवे निर्णय रत्नाकर :

मृदः कोटिगुणं स्वर्णं, स्वर्णात्कोटि गुणं मणिः ।

मणोः कोटिगुणं बाणो बाणात्कोटिगुणं रसः

रसात्परतरं लिंगं न भूतो न भविष्यति ॥

अर्थात् मिट्टी या पत्थर से करोड़ गुना अधिक फल स्वर्ण निर्मित शिवलिंग के पूजन से मिलता है । स्वर्ण से करोड़ गुना अधिक मणि, और मणि से करोड़ गुना अधिक फल बाणलिंग नमंदेश्वर के पूजन से प्राप्त होता है । नमंदेश्वर बाण लिंग से भी करोड़ गुना अधिक फल पारद शिवलिंग के पूजन या दर्शन मात्र से ही प्राप्त हो जाता है । पारद निर्मित शिवलिंग से श्रेष्ठ शिवलिंग न तो संसार में हुआ है, और न हो सकता है ।

६. रस मार्तण्ड :

लिंगं कोटि सहस्रस्य यत्फलं सम्यगर्चनात् ।

तत्फलं कोटिगुणितं रसलिंगार्चनाद् भवेत् ।

ब्रह्महत्यासहस्राणि गौहत्याशतानि च ।

तत्क्षणाद्विलयं यान्ति रसलिंगस्य दर्शनात्
स्पर्शना प्राप्यते मुक्तिरिति सत्यं शिवोदितम् ।

अर्थात् हजारों करोड़ों शिवलिंगों की पूजा करने से जो फल प्राप्त होता है उससे भी करोड़ों गुना फल पारद शिवलिंग के पूजन से प्राप्त होता है । हजारों ब्रह्म हत्याओं और सैंकड़ों गौ हत्याओं का किया हुआ पाप भी पारद शिवलिंग के दर्शन करते ही दूर हो जाता है । स्पर्श करने से तो निश्चित रूप से मुक्ति प्राप्त होती है यह स्वयं भगवान् शिव का कथन है ।

७. ब्रह्म पुराण :

घन्यास्ते पुरुषः लोके येऽर्थयन्ति रसेश्वरम् ।

सर्वपापहरं देवं सर्वकामफलप्रदम् ॥

ब्राह्मणाः क्षत्रियाः वैश्यास्त्रियः शूद्रान्त्यजादयः ।

सम्पूज्य तं सुरवरं प्राप्नुवन्ति परां गतिम् ॥

अर्थात् संसार में वे मनुष्य घन्य हैं, जो समस्त मनोवांछित फलों को देने वाले पारद-शिवलिंग का पूजन करते हैं । इसका पूजन ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, स्त्री या अन्त्यज कोई भी करके पूर्ण भौतिक सुख प्राप्त करता हुआ परम गति को प्राप्त कर सकता है ।

८. ब्रह्मवैवर्त पुराण :

पच्यते कालसूत्रेण यावच्चन्द्रदिवाकरो ।

कृत्वालिंगं सकृत्पूज्यं वसेत्कल्पशतं दिवि ।

प्रजावान् भूमिवान् विद्वान् पुत्रबान्धववास्तथा

ज्ञानवान् मुक्तिवान् साधुः रसलिंगार्चनाद् भवेत् ।

अर्थात् जो एक बार भी पारद-शिवलिंग का विधि विधानों से पूजन कर लेता है, वह जब तक सूर्य और चन्द्र रहते हैं तब तक पूर्ण सुख प्राप्त करता है उसके जीवन में धन, यश, मान, उपद, प्रतिष्ठा, पुत्र, पौत्र, विद्या, ज्ञान, आदि में कोई कमी नहीं रहती और अन्त में वह निश्चय ही मुक्ति प्राप्त करता है ।

६. शिवपुराण :

गोधनश्चैव कृतघ्नश्च वीरहा भूणहापि वा ।
शरणागतघाती च मित्र विश्रम्भघातकः ।
दुष्टपापसमाचारो मातृपितृहापि वा ।
अर्चनात् रसलिगेन तत्तत्पापात् प्रमुच्यते ॥

अर्थात् गो-हत्यारा कृतघ्न, वीरघाती, गर्भस्थ शिशु की हत्या करने वाला तथा माता-पिता का घातक भी यदि पारद-शिवलिंग की पूजा करता है तो वह तुरन्त सभी पापों से मुक्त हो जाता है ।

१०. वायवीय संहिता :

आयुरारोग्यमेश्वर्यं यच्चान्यदपि वाञ्छितम् ।
रसलिंगस्यार्चनादिष्टं सर्वं लभते नरः ॥

अर्थात् आयु, आरोग्य, ऐश्वर्य तथा और जो भी मनोवाञ्छित वस्तुएँ हैं उन सबको पारद-शिवलिंग की पूजा से सहज में ही प्राप्त किया जा सकता है ।

इसके अलावा भी सैकड़ों ग्रन्थों में पारद-शिवलिंग की विशेषता बताई है । भगवान् शंकर ने स्वयं कहा है कि मुझे वह व्यक्ति ज्यादा प्रिय है जो द्वादश ज्योतिर्लिंग के दर्शन करने की अपेक्षा मात्र पारद शिवलिंग के दर्शन कर लेता है ।

पारद शिवलिंग आर्द्रता रहित, निश्चल, छिन्न-पक्षरहित, श्वेत लिंगाकार होना चाहिए और ऐसा शिवलिंग शास्त्र सम्मत होना आवश्यक है, क्योंकि शिवलिंग और उसके आधार का एक निश्चित परिमाण है, यह कार्य केवल "विजय-काल" में ही सम्पन्न करना चाहिए, और इस प्रकार श्रेष्ठ समय में पारे को रससिद्ध करके उसे ठोस बनाने की प्रक्रिया करनी चाहिए, साथ ही साथ शिवलिंग का आकार भी विजय काल में ही सम्पन्न करना चाहिए ।

इसके बाद श्रेष्ठ मुहूर्त में पारद-शिवलिंग को मुद्रा बन्ध, अर्चन, प्राण-प्रतिष्ठा, मन्त्र-सिद्ध, रससिद्ध,

करना चाहिए । ऐसा होने के बाद संजीवनी मुद्रा मन्त्र से उसे प्रभाव पूर्ण बनाना चाहिए, ऐसा होने पर ही पारद-शिवलिंग दुर्लभ शिवलिंग बनता है और भारत में बहुत ही कम सौभाग्यशाली व्यक्तियों के घर में ऐसा शिवलिंग है ।

जब भाग्य होता है, तभी इसी प्रकार का ज्ञान प्राप्त होता है, जब सौभाग्य का उदय होता है तभी व्यक्ति इस प्रकार का पारद-शिवलिंग प्राप्त करता है, वस्तुतः वे व्यक्ति और उनकी पीढ़ियाँ धन्य हैं जिनके घर में देव-दुर्लभ पारद-शिवलिंग स्थापित है ।

शास्त्रों के अनुसार पारद-शिवलिंग को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाया जा सकता है । मेरे जीवन ऐसे में हजारों अनुभव हैं, यदि उन्हें लेखनीबद्ध किया जाय तो पूरा एक ग्रन्थ बन सकता है कि पारद शिवलिंग के पूजन से उन लोगों ने उन असम्भव कार्यों को भी सम्भव कर दिखाया है जो उनके लिये सम्भव नहीं थे । ऐसे व्यक्ति दरिद्रता के घर में जन्म लेकर भी प्रसिद्ध उद्योगपति और लक्ष्मीपति होते देखे गये हैं, संसार में और सभी मन्त्र-तन्त्र झूठे हो सकते हैं पर ऐसा एक भी उदाहरण प्राप्त नहीं है कि किसी के घर में पारद-शिवलिंग स्थापित हो और उसके जीवन में पूर्णता प्राप्त न हुई हो ।

जिसके घर में पारद-शिवलिंग होता है, वह घर तीर्थ के समान माना जाता है और उसमें रहने वालों के समस्त कार्य सुविधापूर्वक सम्पन्न होते रहते हैं । ऐसे व्यक्ति अपने जीवन में पूर्ण भोग भोगते देखे गये हैं, ऐसे घरों से नित्य मंगलदायक समाचार प्राप्त होते रहते हैं, जीवन में अभाव या न्यूनता नहीं रहती अपितु उनकी सारी इच्छाएँ स्वतः ही पूरी होती रहती है ।

वास्तव में ही जिसके तप, ज्ञान द्वारा पाप क्षीण होते हैं उनको ही पारद शिवलिंग की पूजा का सौभाग्य प्राप्त होता है । हो सकता है, आजके इस अनास्थावान युग में यह बात विश्वसनीय प्रतीत नहीं

हो रही हो, पर यह उनका दुर्भाग्य ही है कि वे सही रूप में सोच ही नहीं पाते ।

मेरे स्वयं के अनुभव के आधार पर मैं यह घोषणा करने में सक्षम हूँ कि पारद शिर्वालिग अपने आप में दुर्लभ शिर्वालिग है बिना प्रसिद्ध योगी या गुरु के इस प्रकार का शिर्वालिग प्राप्त नहीं हो पाता, और भाग्य से ही रससिद्ध पारद-शिर्वालिग घर में स्थापित हो पाता है ।

इस जीवन में धन तो आता जाता रहता है,

परन्तु जीवन का सौभाग्य उदय होने पर ही व्यक्ति सही निर्णय कर पाता है और प्रयत्न करके अपने घर में पारद शिर्वालिग स्थापित कर पाता है, जिससे वह तो पूर्ण भोग और मोक्ष प्राप्त करता ही है, उसकी प्राप्ति की पीढ़ियाँ भी उसके प्रति कृतज्ञ रहती हैं जिसकी वजह से उनके घर में पारद शिर्वालिग स्थापित हो सका ।

आज के इस युग में भी पारद-शिर्वालिग एक चमत्कार है, एक श्रेष्ठ साधना है, एक आश्चर्यजनक सफलतादायक उपाय है ।



संकलन - ध्रुव निखिल
बिलासपुर CG 9669278815